ईदे ग़दीर

बिन्ते ज़हरा नक़वी 'नदल हिन्दी'

सुन चुके हैं लोग पैग़ामे ग़दीर
चल रहे हैं बज़्म में जामे ग़दीर

क्या अजब हैं सुबह और शामे ग़दीर
रौनक़े आलम हैं अय्यामे ग़दीर

मा हसल तबलीग़ का पूरा हुआ
आज कल है दीन, इस्लामे ग़दीर

अर्श रुतबा, फ़र्श पर बैठे हैं आज
कम से कम इतना है इकरामे ग़दीर

हर तरफ़ सुनते हैं बख़्ख़िन की सदा
हैं ज़बानें ज़ेरे अहकामे ग़दीर

ले चले हुज्जाज बहरे अक़रेबा
तोहफ़-ए-तबरीको पैग़ामे ग़दीर

मन्ज़िले अनवार है मदफ़न, 'नदा'
मरते ही पाया ये इनामे ग़दीर

मद्हे इमामे रिज़ा

कौन आया ये क्यों ख़ुशी है बहुत
क्या मदीने में रौशनी है बहुत

एक अली[अ०] आ गया अली[अ०] के घर
ये ख़बर आम हो गई है बहुत

देख कर ख़ान-ए-अली[अ०] में ख़ुशी
काबतुल्लाह को ख़ुशी है बहुत

चाँद काज़िम के घर में उतरा है
इसलिए आज चाँदनी है बहुत

बे-अमल को घड़ी की क़द्र नहीं
बा-अमल को घड़ी-घड़ी है बहुत

इस जहाँ में ख़ुदारसी के लिए
सच यही है कि ख़ुदरसी है बहुत

वादि-ए-मदह में पड़े हैं हुज़ूर
लग रहा है कि आज पी है बहुत

चलिए-चलिए रज़ा[अ०] की चौखट पर
इल्मो इरफ़ाँ की तश्नगी है बहुत

उनका एहसान कल भी था बेहद
उनका एहसान आज भी है बहुत

हम को जन्नत की फ़िक्र कुछ भी नहीं
हम को मौला तेरी गली है बहुत

बुलबुले गुलशने मनाक़िब हूँ
मुझको बस गुलशने अली[अ०] है बहुत

वक़्त की क़द्र जान लो जो 'नदा'
चार दिन की ये ज़िन्दगी है बहुत